International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संसाधनों का अस्तित्व एवं मानवीय विकास एक भौगोलिक अध्ययन

विजय कुमार

सहायक आचार्य भूगोल

राजकीय महाविद्यालय कोसली

परिचयात्मक शोध का विश्लेषण

''संसाधन का अर्थ किसी उद्देश्य की प्राप्ति करना है। यह उद्देश्य व्यक्ति की आवश्यकताओं तथा सामजिक लक्ष्यों की पूर्ति करना है।'' जीवनयापन के लिए की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय कहते है। मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं पर भौतिक व सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। किसी भी क्षेत्र का भौगौलिक पर्यावरण वहां के समाज की आर्थिक स्थिति एवम् समाज के लोगों के रहन–सहन, खान–पान व रीति–रिवाजों को भी प्रभावित करता है। इसलिए भौगोलिक पर्यावरण के साथ–साथ वहा के आर्थिक, सामाजिक एवम् सांस्कृतिक पर्यावरण का अध्ययन वहाँ का समावलित भू– दृश्य उत्पन्न करता है।

मनुष्य के ज्ञान एवं तकनीक के विकास के साथ नए–नए संसाधन अस्तित्व में आये हैं। जिससे संसाधनों की संख्या में बढ़ोतरी होती रही है। किसी वस्तु या पदार्थ को संसाधन की श्रेणी में तभी रखा जा सकता है, जब वह मनुष्य की किसी न किसी आवश्यकता या उद्देश्य की पूर्ति करता हो या करने में समर्थ हो।

किसी भी प्रदेश की आर्थिक स्थिति उस क्षेत्र की प्राकृतिक परिस्थितियो की देन होती है। किन्तु मानव अपने प्रयास से यथोचित परिवर्तन कर उसे अपने अनुकूल बना लेता है। इस तथ्य का स्पष्ट उदाहरण स्वंय श्रीगंगानगर क्षेत्र है। एक समय यह संपूर्ण क्षेत्र मात्र मरूस्थल से युक्त था, जहां बालूका स्तूप एवं रेतीली आंधियों का प्रकोप था, किन्तु सन् 1927 में गंगनहर के आ जाने के पश्चात् इस क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया और शीघ्र ही यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से राजस्थान का सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया।

वर्तमान समय में यह नगर आर्थिक दृष्टि से राजस्थान के प्रमुख नगरों में गिना जाता है। आर्थिक प्रगति की दृष्टि से इसका अन्य नगरों की तुलना में अत्यन्त उच्च स्थान है। जिलें में कार्यशील जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि पर निर्भर है। जिलें की अर्थव्यवस्था में उद्योग व सेवा क्षेत्र का योगदान भी है। खनन क्षेत्र का योगदान बहुत कम है।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आर्थिक स्वरूप के अन्तर्गत कृषि, सिंचाई, भूमि उपयोग, उद्योग धंधे, खनिज सम्पदा, पशु सम्पदा व परिवहन तंत्र आदि आते है इन्हीं शीर्षको के अन्तर्गत प्रस्तुत क्षेत्र का परिचय अधिक प्रभावी ढंग से दिया जा सकता है।

खनिजों की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता और आर्थिक दृष्टि से गुणवत्ता किसी भी क्षेत्र के लिए आधार प्रस्तुत करती है। खनिज प्राकृतिक रूप से उपलब्ध ऐसी वस्तुएँ है, जिनकी उपलब्धता पृथ्वी की सतह से नीचे होती है। श्रीगंगानगर जिला खनिज पदार्थो की दृष्टि से कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखता है। यहां पर खनिजों का उत्पादन बिल्कुल ही कम हो पाता है।

श्रीगंगानगर जिले में खनिज संपदा के रूप में केवल जिप्सम बहुतायत से मिलता है। जिले में मुख्यतः जिप्सम निकाली जाती है। इसकी खाने टोलनिया, सूरतगढ किशनपुरा व रंगमहल (अनूपगढ) व नोहर के ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध है। जिले में खनिज पदार्थो का अभाव मिलता है। जैसे जैसे यहाँ विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है, वैसे –वैसे यहाँ खनिजों का पता लगना शुरू हुआ है।

जिप्सम एक तहदार किस्म की होती है, जो अपने रवे के रूप में सेलेनाइट कहलाती है। राजस्थान राज्य को खनिज की दृष्टि से एक सम्पन्न राज्य माना जाता है, और इसे खनिजों का **'अजायबघर'** भी कहा जाता है। किन्तु श्रीगंगानगर जिले में खनिज सम्पदा अल्प मात्रा में उपलब्ध है। जिप्सम खनिज पदार्थ मुख्य रूप से प्लास्टर ऑफ पेरिस, पोर्टलैण्ड सीमेन्ट और उर्वरक के बनाने में काम आता है। ये रंग–रोगन, गंधक, तेजाब तथा अमोनियम सल्फेट आदि बनाने में भी जिप्सम का प्रयोग होता है।

कृषि भूमि संसाधन

श्रीगंगानगर जिला कृषि उत्पादन में देश में अपना अग्रिम स्थान रखता है। जिले में सन् 1927 से गंगनहर आने के बाद से ही श्रीगंगानगर एक कृषि प्रधान तथा कृषि के क्षेत्र में अग्रणी जिला बन गया है। श्रीगंगानगर में कृषि का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

कृषि प्रधान जिला होने के कारण यहां के लोगों का जीवन स्तर अच्छा है। कृषि कार्यो से किसानों के अलावा श्रमिक वर्ग को भी आसानी से कार्य मिल जाता है। असामायिक एवं अनिश्चित वर्षा तथा अनावृष्टि और अंसतुलित जल वितरण के कारण यहां फसल उत्पादन असुरक्षित रहता है।

श्रीगंगानगर की कृषि भूमि समतल व उपजाऊ है। कृषि मानसून पर निर्भर करती है। पाथमिक स्तर की आर्थिक क्रियाओं में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। पूर्व में यहां कृषि तकनीकी,

रासायनिक खादें, कृषि यंत्र आदि उपलब्ध नहीं थे। कृषि कार्य में लगे लोग परम्परागत ढंग से ऊँट और बैलों से तथा स्वंय के द्वारा तैयार किए गए बीजों से ही खेती किया करते थे। खाद के रूप में गोबर की खाद तथा हरी खाद का प्रचलन था। सिंचाई के साधन भी उपयुक्त एवं पर्याप्त नहीं थे। सर्वप्रथम 50 के दशक में यहां पर ट्रैक्टरों का आगमन हुआ।

कृषि विभाग ने मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला, बीज उपचार केन्द्र तथा कृषि विस्तार इकाईयां की स्थापना कर किसानों को राजकीय सेवायें पहुचांने का प्रचार–प्रसार किया। इस प्रकार श्रीगंगानगर जिला कृषि उत्पादन में अग्रणी जिला बन गया। कृषि जिंसों की पैदावार समुचित मात्रा में होने के फलस्वरूप कृषि उपज मण्डियों के लिए यह जिला अग्रणीय है। खाद्यानों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता को प्राप्त करने की दिशा में ये क्षेत्र अग्रसर है। सबसे अधिक कृषि मण्डीया व किन्नू की मण्डी श्रीगंगानगर में है। सर्वाधिक कृषिगत औजार गंजसिहपुर श्रीगंगानगर में बनाये जाते है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

मनुष्य के ज्ञान एवम् तकनीक के विकास के साथ–साथ नये–साथ संसाधन अस्तित्व में आते है, जिससे संसाधनों की संख्या बढती जाती है। वह तत्व या स्रोत जो मानवीय उद्धेंश्यों तथा आवश्यकताओं की पूर्ती करने के लिए सक्षम है, ससांधन कहलाते है। किसी वस्तु या पदार्थ को संसाधन की श्रेणी में तभी रखा जा सकता है जब वह मनुष्य की किसी न किसी आवश्यकता या उद्धेश्य की पूर्ति करता हो या करने में समर्थ हो। किसी भी देश मे उपलब्ध विविध संसाधनों के विकास के माध्यम से राष्ट्र के क्षमतावान विकास एवम् आगे बढने की दृढ़ इच्छा शक्ति के आधार माध्यम तो मानवीय गुणोतरता ही है।

''प्रशिक्षित एवम् विकास के प्रति आशावान व श्रम करने वाली जनशक्ति से बढकर अन्य कोई संसाधन हो ही नही सकता'' आज सरकारे विकास के लिए प्रथम चरण के रूप में जनशक्ति जागृति करती है। आज प्रशिक्षित एवम् शिक्षित समाज, राष्ट्र विकास का सबसे बढ़ा संबल है व यह सबसे बड़ा संसाधन भी है इसलिए यह भी कहा गया है, कि अधिक संसाधन मनुष्य में है न कि भूमि में। मेहनती, विकास की चाह रखने वाली कुषल जनसंख्या से जापान सीमित संसाधनों मे भी विष्व के सबसे धनी देशों मे से एक बन बैठा है।

''मानव संसाधन की उत्कृष्ट क्षमता ही विकास के द्वार की प्रथम कुंजी है'' अतः मानव संसाधन ही आर्थिक एवम् क्षेत्रिय विकास को सर्वाधिक प्रभावित करता है। अतः मानव संसाधन एवम् अन्य ससांधनो के उपयुक्त संयोग से ही विकास संभव है।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

क्षेत्र का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि कुछ वर्षो में गेहूँ के उत्पादन में कुछ उतार–चढ़ाव देखने को मिला है, जिसका प्रमुख कारण क्षेत्र में वर्षा की कमी तथा नहरों में पर्याप्त पानी का उपलब्ध न होना रहा है। सामान्यतः जो प्रवृति गेहूँ उत्पादन में देखी गई है, वही प्रवृति अन्य फसलों के उत्पादन में भी रही है। सरसों जो श्रीगंगानगर जिले की एक अन्य महत्वपूर्ण उपज रही है। वर्ष 2005–06 में कुल उत्पादन 276710 मी.टन, वर्ष 2006–07 में 343672 मी.टन, वर्ष 2007–08 में 137110 है। मी.टन, वर्ष 2008–09 में 165000 है, मी.टन, वर्ष 2009–10 में 192579 मी.टन है। तथा वर्ष 2010–11 में कुल उत्पादन 155000 मी. टन सरसों का उत्पादन किया गया। वर्ष 2010–11 मे अत्यधिक कोहरा गिरने के कारण सरसों के उत्पादन में अत्यंत गिरावट देखी गई है। श्रीगंगानगर जिले में वर्ष 2005–06 से वर्ष 2010–11 तक रबी की विभिन्न फसलों का उत्पादन क्षेत्र, उत्पादकता तथा उत्पादन को प्रभावित करता है।

शहर के पूर्वी भाग में औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना रेल लाईन एवम् यार्ड की उपलब्धता के कारण की गई थी। यहाँ पर नये उद्योग कॉटन–जिनिंग उद्योग, प्रेसिंग एवं तेल निकालने की इकाईया कार्यरत है व आस–पास क्षेत्र के लिए सबसे बडी मण्डी है, श्रीगंगानगर में केवल दो बडी औद्योगिक इकाईया यथा श्रीगंगानगर शुगर मिल एवम् टेक्स टाईल उद्योग थे, जहाँ पर 3000 श्रमिक कार्यरत थे, परन्तु इनमें से टेक्सटाईल उद्योग वर्तमान में बन्द हो गया है। यहाँ पर घरेलू उद्योगो में केवल जूता, रेडिमेट, वस्त्र एवम् ज्वैलरी का ही काम मुख्य रूप से होता है। घरेलू एवम् कोटेज उद्योगों में कुल कार्यशील व्यक्ति कुल मुख्य श्रमिकों का 2.77 प्रतिषत है। शहर में सुविधाओं के विस्तार होने से यहा पर अब औद्योगिक विकास की प्रबल संभावनाए बन रही है। श्रीगंगानगर में वर्ष 1991 कामगारो का प्रतिशत लगभग 29.10 था, जो कि अब वर्ष 2001 में बढकर 32.22 प्रतिशत हो गया व वर्ष 2011 में बढ़कर 34.99 प्रतिशत हो गया है।

श्रीगंगानगर शहर में वर्ष 2001 के आंकडो के अनुसार औद्योगिक भू उपयोग के अतंर्गत 81.77 हैक्टेयर भूमि विकसित थी, जबकि वर्ष 2014 के आकड़ो के अनुसार औद्योगिक भू उपयोग के अतंर्गत 200 हैक्टेयर भूमि आती है, जो विकसित क्षेत्र का 7.00 प्रतिशत है। इस प्रकार उद्योगिक भू उपयोग के अंतर्गत क्षेत्रफल में तीन गुना वृद्धि हुई है। रीकों द्वारा भी शहर में दक्षिण की और हनुमानगढ रोड पर चक्र श्यामसिह वाला में औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 164.50 हैक्टेयर है। शहर के मध्य मे स्थापित औद्योगिक इकाईयों को जो कार्यरत नही है अथवा जिनमें बाहरी वाहनों का आवागमन बना रहता है, उन्ही औद्योगिक क्षेत्र में स्थानातरित किया जाना प्रस्तावित

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है। इसके अतिरिक्त शहर के मध्य चल रहे उद्योग, चूने एव ईट के भट्टे जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, को वहा से स्थानातरित किया जाना प्रस्तावित है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

श्रीगंगानगर जिला, जो अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी दोनो शाखाओं के अंतर्गत पडता है, में पवनों के लिए कोई अवरोध न होने के कारण यह क्षेत्र लगातार मानसून की अपेक्षा और अनिश्चितता का शिकार रहा है, जिससे यहाँ पर लगातार अकाल तथा सूखे की स्थिति उत्पन्न होती रहती है। यही कारण है कि यहां वर्षा की कमी के कारण उपजाऊ भूमि, उन्नत बीज तथा रसायनिक खाद्य के प्रयोग के उपरान्त भी उत्पादन सम्भव नही हो पाता है। अतः आवश्यक है कि जिन क्षेत्रों में अच्छी किस्म के बीज, रासायनिक खाद्य एवम् आधुनिक ढंग से कृषि की जा रही है वहा सिचांई के साधनों का होना अति आवश्यक है, अन्यथा कृषि पर किये गये आधुनिक प्रयोग असफल साबित होगे। अतः इस समस्या से निजात पाने के लिए यहा सिंचाई के वैकल्पिक साधनों का विकास किया गया जिनमें नहरो का प्रमुख स्थान है। श्रीगंगानगर जिला जहां वर्तमान में तीन नहर प्रणालिया गंगनहर, इंदिरागाँधी नहर तथा भाखड़ा नहर कार्यरत है, में सिंचाई क्षेत्र के विस्तार की दृष्टि से गंगानगर का प्रमुख स्थान है। श्रीगंगानगर जिलें के अंतर्गत तीनों नहर प्रणालियों द्वारा सिंचित तथा बारानी रकबों के अंतर्गत क्षेत्र को प्रदर्शित किया गया है सिंचाई व्यवस्था उपलब्ध होने के कारण ही तो गंगानगर कृषि क्षेत्र में उत्तम फसल पैदा कर रहा है।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

श्रीगंगानगर में खरीफ की मुख्य फसल देसी कपास एवं नरमा का भारी मात्रा में उत्पादन होता है। रबी में गेहूँ (कनक) एवं सरसों की बहुतायत से पैदावार होती है। कृषकों ने निजी प्रयासों से नलकूप लगाकर सिंचाई की अपनी सुविधा से उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि की है। श्रीगंगानगर क्षेत्र की प्रमुख फसलों में गेहूँ, जौ, सरसों, चना, नरमा, कपास, ग्वार तथा गन्ना आदि है। वर्तमान में किन्नू सहित वाणिजिक फसलों में अंजीर, जोजोबा, खजूर सहित कई फसलें उगाई जाती है। श्रीगंगानगर जिला कृषि व्यवस्था जीविकायापन कृषि की स्थिति से निकलकर वाणिज्य कृषि की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रहा है। ग्वार का उत्पादन मुख्यतः चारे के रूप में किया जाता है। रेशेदार फसलों के अंतर्गत देशी और अमेरिकन दोनों प्रकार की कपास का उत्पादन प्रमुखता से किया जाता है। श्रीगंगानगर क्षेत्र कषि उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान में अग्रणी स्थान रखता है। सिंचाई की सुविधा एवम् उन्नत कृषि तकनीकों के उपयोग के माध्यम से इस क्षेत्र में खाद्यानों का औसत उत्पादन राज्य के अन्य क्षेत्रों से अधिक रहता है।

श्रीगंगानगर जिले के गत छः वर्षो में बोयी गई रबी और खरीफ की फसलो का अवलोकन करे तो ज्ञात होता है कि बोये गये क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि हो रही है। रबी की प्रमुख फसलों में गेहूँ जहां वर्ष 2005–06 में 121750 हैक्टेयर, वर्ष 2006–07 में 156750 हैक्टे, वर्ष 2008–09 में 165000 हैक्टे. वर्ष 2009–10 में 192579 हैक्टेयर. तथा वर्ष 2010–11 में कुल 155000 हैक्टेयर क्षेत्र में गेहूँ की बुवाई की गई। बोये गये क्षेत्र के अलावा उत्पादन में भी वृद्वि दर्ज की गई है। वर्ष 2005–06 में 389600 मी.टन. वर्ष 2009–10 में 674026 मी.टन, वर्ष 2010–11 में 465000 मी. टन गेहूँ का उत्पादन किया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Asano, Takashi (1985). Artififcial Recharge to Groundwater. Butterworth Publications.
2. Concepts and Practices for Rainwater Harvesting (2001). Central Pollution Control Board, Ministry of Environment and Forest, pp. 36.
3. Feachem,R.G.Bradley,D.J.,Garelick,H.and Mara,D.D.,(1978),Health Aspects of Excreta and Waste Water Management,Washington D.C., World Bank.
4. Guide on Artificial Rechage to Groundwater (1998). Central Groundwater Board, New Delhi
5. Khan, M.A. (2006). Watershed Management for Sustainable Agriculture Agrobios Publications.